सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-14 22 जुलाई से 5 अगस्त, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

5 अगस्त, 1923 – 5 अगस्त, 1976

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम

''आज के समाज में मजदूर-किसानों, शोषित-पीड़ित जनता के विक्षोभ के आधार पर क्रान्ति बार बार उभरना चाहेगी, विस्फोट का झौंका सा आता दिखाई पड़ेगा। समाज के अन्दरूनी द्वंद्व बार बार क्रान्तिकारी उफान पैदा कर वर्तमान व्यवस्था को आमूलचूल बदल डालने के लिए ललकारेंगे और हर एक आदमी के जमीर को झकझोरते हुए उनसे बार-बार मांग करेंगे कि इन्कलाब होना चाहिए, क्रान्ति की बहुत जरूरत है लेकिन क्रान्ति तब तक नहीं होगी, वह बार बार वापस लौट जाएगी, गुमराह होकर भटक जाएगी, उससे बार बार प्रतिक्रियावादी फायदा उठा लेंगे जब तक कि क्रान्ति का नेतृत्व करने लायक क्षमता सहित मजदूर वर्ग की शक्तिशाली क्रान्तिकारी पार्टी गठित न हो।

क्रान्ति और क्रान्तिकारी पार्टी का सवाल एक-दूसरे से ओत प्रोत रूप में जुड़ा हुआ है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि नेतृत्व देने लायक क्षमता लिए हुए क्रान्तिकारी पार्टी तैयार हुए बिना ही क्रान्ति हो गई हो। ऐसा इतिहास में न कभी हुआ , न ही कभी होता और न ही कभी होगा।''

–शिवदास घोष

महान लेनिन के संरक्षित शव को मास्को मुसोलियम से हटाने की नई साजिश के प्रतिवाद में शामिल हों

(हाल ही में खबर छपी है कि रूस की बुर्जुआ पुतिन सरकार ने मास्को मुसोलियम में रखे हुए महान लेनिन के संरक्षित शव को हटा कर कहीं और समाधिस्थ करने की याजना बनायी है। इसके खिलाफ विश्व जनमत तैयार करने की पहल करके एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी ने इन्टरनेट वेव साइट www.handsofflenin.org के जरिये आह्वान करते हुए जो अपील जारी की है उसका हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जा रहा है।)

महान लेनिन के सरंक्षित शव को मास्को स्थित उनकी समाधि से हटा कर कहीं और दफनाने की रूस की पुतिन सरकार का कथित नया कदम इतिहास को कलंकित करने के कुत्सित प्रयास के अलावा और कुछ नहीं है।

लेनिन न केवल रूस के राजनैतिक नेता थे, बल्कि मानवजाति के एक महान सपूत भी थे। उन्होंने रूस के मेहनतकश लोगों को आर्थिक-राजनैतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक शोषण-जुल्म, और दमन-उत्पीड़न से मुक्ति के लिए नेतृत्व दिया था और अपने हाथों से धरती पर प्रथम समाजवादी राज्य सोवियत यूनियन (यूएसएसआर) कायम किया था। मेहनतकश लोगों को सामाजिक उत्पीड़न से छुटकारा और ईज्जत की जिन्दगी, मानवकल्याण और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के स्वाधीन चौतरफा विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ तैयार करने का तौर तरीका और रास्ता दुनिया में पहले पहल मार्क्स-एंगेल्स ने दिखाया था। मार्क्स-एंगेल्स के वैज्ञानिक विचारों को रूस में ठोस रूप में लागू करने, सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति करने और वैज्ञानिक समाजवाद को मूर्त रूप देने वाले, सोवियत समाजवादी व्यवस्था कायम करने वाले पहले इन्सान थे लेनिन। पहले लेनिन और फिर उनके बाद स्टालिन के नेतृत्व में संचालित सोवियत यूनियन वह देश था जहाँ मानव द्वारा मानव के शोषण, नस्लीय भेदभाव, राष्ट्रीय उत्पीड़न और बृहद राष्ट्रसुलभ दंभ का खात्मा हो गया था। ये लेनिन ही थे जिन्होने दिखाया था कि आज के युद्ध का कारण साम्राज्यवाद है और जब

(शेष पृष्ठ 2 पर)

गुवाहाटी में युवती के साथ हुई छेड़छाड़ की घटना के खिलाफ प्रदर्शन

दिल्ली: गुवाहाटी(आसाम) में बीस लड़कों की टोली द्वारा एक अकेली लड़की को सरे राह निर्वस्त्र करने, सिगरेट से जलाने और छेड़छाड़ करने की घटना के खिलाफ 19 जुलाई को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (ए.आई.एम.एस.एस.), ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (ए.आई.डी.वाई.ओ.) व ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (ए.आई.डी.एस.ओ.) के सदस्यों ने जंतर मंतर पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी दिल्ली के विभिन्न इलाकों से आकर प्रातः 11 बजे जंतर-मंतर पर इकट्ठा हुए। विरोध सभा को ए.आई.एम.एस.एस. की राज्य उपाध्यक्ष कॉ. शुभा दीक्षित, ए.आई.डी.वाई.ओ. की सचिव कॉ. प्रकाश सैनी एवं कॉ. इन्द्र देव व ए.आई.डी.एस.ओ. के राज्य सचिव कॉ. प्रशान्त कुमार, कॉ. राहुल सरकार व कॉ. मो. आसिफ ने संबोधित किया। सभा का संचालन ए.आई.एम.एस.एस. की दिल्ली राज्य संयोजिक कॉ. ऋतु कौशिक ने किया। वक्ताओं ने

कहा कि महिलाओं पर अपराध दिन-ब-दिन बढ़ते हुए बहुत ही घिनौना रूप लेते जा रहे हैं जैसा कि गुवाहाटी की घटना में

(शेष पृष्ठ 2 पर)

गुवाहाटी में...

(पृष्ठ 1 का शेष)

प्रकट हुआ है। यह समाज पर एक बदनुमा दाग है। यह हमला एक लड़की पर हुआ सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि यह सम्पूर्ण नारी मर्यादा और मानवीय गरिमा पर ही हमला है। लेकिन इतनी घिनौनी घटना अचानक नहीं हुई। अश्लील विज्ञापनों, अश्लील सिनेमा व साहित्य और शराब आदि नशीले पदार्थों की बेरोकटोक बिक्री की सरकार की जनविरोधी नीतियों के द्वारा समाज में पतित माहौल तैयार हो रहा है जिस पर सरकार कोई भी रोक लगाने की बजाय उसे लगातार बढ़ावा दे रही है। छात्र-नौजवानों की नैतिक रीढ़ को तोड़ डालने के लिए स्कूल स्तर पर यौन शिक्षा लागू कर रही है। समाज में सांस्कृतिक पतन तेजी से बढ़ रहा है। इस सब के फलस्वरूप महिलाओं पर हमले लगातार बढ़ रहे हैं और उनके लिए समाज में घुटन भरा असुरक्षित माहौल तैयार हो रहा है।

संगठनों ने इस विशेष घटना तथा पूरे देश भर में महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों व अपराधों की निन्दा करते हुए गृह मंत्री को एक ज्ञापन सौंपा जिसमें मांग की गई कि गुवाहाटी में घटी घटना के सभी दोषियों को तुरन्त गिरफ्तार कर उदाहरणमूलक सजा दी जाए, घटना स्थल पर देर से पहुँचने वाले दोषी पुलिस अधिकारियों को निलम्बित किया जाए, शराब आदि नशीले पदार्थ बेचने और अश्लीलता फैलाने पर रोक लगाई जाए।

गुना (म.प्र.) : महिलाओं पर बढ़ते अपराधों और उनके आजादी के हक के हनन के खिलाफ गत दिनों ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन ने गृहमंत्री के नाम एक ज्ञापन जिला कलेक्टर को दिया। इसमें गुवाहाटी में 11वीं कक्षा की एक छात्रा के साथ 20 लड़कों द्वारा सामूहिक रूप से मारपीट और बेइज्जती करने के दोषियों को कड़ी सजा दी जाये ताकि ऐसे काण्डों की पुनरावर्ती रोकी जा सके। उ.प्र. में बागपत जिले की खाप पंचायत द्वारा महिलाओं के बाजार जाने, मोबाइल रखने आदि पर बंदिशें लगा कर उनकी आजादी के अधिकार का हनन किये जाने के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई करने की माँग की गई।

गुवाहाटी काण्ड के विरुद्ध गुजरात में महिलाओं, छात्र-नौजवानों का विरोध प्रदर्शन

संगठन की जिलाध्यक्ष कॉ. संगीता आर बी और जिला सचिव कॉ. विधि दश्रीवास्तव ने बताया कि इस तरह की घटनाएं पूरे देश भर में आम बात हो गई हैं। सरकार व पूरा प्रशासन इनके दोषियों पर सख्ती से कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। साथ ही शराब, स्मैक व अश्लील प्रसारणों पर रोक न लगने की वजह से भी ऐसे कुकृत्यों को बढ़ावा मिल रहा है। गुवाहाटी मामले ज्ञापन देते समय संगठन की नगराध्यक्ष सीमा राय, उपाध्यक्ष ललिता अग्रवाल, नगर सहसचिव ज्योति, प्रभा एवं रानी राणा भी मौजूद थी।

स्थाई नियुक्ति की माँग को लेकर शिमला में राज्य के जेबीटी प्रशिक्षितों के लम्बे अर्से से जारी आन्दोलन के प्रति समर्थन जताते हुए एसयूसीआई (सी) दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य एवं एआईयूटीयूसी के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. हरीश कुमार। उनके साथ अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमेटी की तरफ से इन्द्रजीत सिंह भी थे।

महान लेनिन...

(पृष्ठ 1 का शेष)

तक साम्राज्यवाद मौजूद रहेगा, तब तक युद्ध का खतरा बना रहेगा।

लेनिन के विचारों से मार्गदर्शित सोवियत यूनियन सबसे पहला और एकमात्र देश था जिसने सुझाव दिया था कि दुनिया में पूर्ण निरस्त्रीकरण के लिए लीग ऑफ नेशन्स द्वारा आह्वान किया जाए। दुनिया की शोषित-पीड़ित और उपनिवेशों की गुलाम जनता के लिए साम्राज्यवादी शासन और आधिपत्य से आजादी की लड़ाई में लेनिन का चिन्तन और शिक्षाएँ राह रोशन करने वाली रोशनी बन गई थी। पूँजीवादी-साम्राज्यावादी शोषण-उत्पीड़न-नस्लीय भेदभाव-राष्ट्रीय प्रभुत्व के खिलाफ 'लेनिन' नाम जैसे अतीत में वैसे ही आज भी बगावत व लड़ाई का और दुनिया के करोड़ों लोगों के असली लोकतंत्र-स्वतन्त्रता-भाईचारे का हरदम चमचमाता प्रतीक बना हुआ है। महान लेनिन के परचम हाथों में लिए हुए और महान स्टालिन के बहादुराना नेतृत्व में सोवियत यूनियन ने लाखोंलाख बेशकीमती जान कुर्बान कर दूसरे विश्व युद्ध में फासीवादी बर्बरता से मानव सभ्यता को बचाया था, यह केवल मानव सभ्यता से गद्दारी करने वाला ही कोई यह भूल सकता है। लेनिन-स्टालिन के संचालन में सोवियत यूनियन युद्ध के खिलाफ विश्व शान्ति के गढ़ के रूप में खड़ा रहा था।

मास्को स्थित समाधि जहाँ पिछले 88 साल से लेनिन का सरंक्षित शव रखा हुआ है, वहाँ आज भी रोजाना हजारों दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है और वे किवंदती बने हुए उस महान नेता के सरंक्षित शव को अपनी आँखों से देख पाने के सुयोग को अपने जीवनकाल की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। लेनिन अतीत में ही नहीं, बल्कि आज भी करोड़ों लोगों के दिलों में जीवन्त प्रेरणा स्रोत के तौर पर विराजमान हैं।

दुर्भाग्यजनक तौर पर पिछली सदी के आखरी दशक में पहले पूर्वी यूरोप और बाद में अन्ततः सोवियत यूनियन में भी समाजवादी व्यवस्थाओं का पतन हो गया जो भले ही सामयिक हो, पर निश्चय ही एक जबरदस्त धक्का है। लेकिन लोगों का यह मिथ्या विश्वास चूर-चूर हो गया है कि पूँजीवादी व्यवस्था में लोगों का विकास होगा, संसदीय लोकतन्त्र से भी जनता का मोहभंग हो गया है और पूरी पूँजीवादी दुनिया लगातार बढ़ते संकटों की गिरफ्त में फंसी हुई हाँफ रही है, आज देश-देश में लोग फिर रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, वेतन बढ़ोतरी और खाद्य की माँगों को लेकर उफनती लहरों की तरह स्वतःस्फूर्त सड़कों पर उतर रहे हैं और पूँजीवाद-साम्राज्यवाद के खात्मे की माँग कर रहे हैं, रूस की जनता भी इसका अपवाद नहीं है। खासकर रूस में प्रदर्शकारी लोग फिर लेनिन और स्टालिन की तस्वीरें हाथों में लिए हुए देखे जा रहे हैं। मौजूदा सड़ी-गली और मरणासन्न पूँजीवादी व्यवस्था से निजात पाने का सही रास्ता तलाशने के लिए मार्क्स-एंगेल्स की कृतियाँ फिर नई दिलचस्पी और उत्साह-उमंग से लोग पढ़ रहे हैं।

केवल लेनिन ही आज से 96 साल पहले वित्तीय पूँजी के चरित्र को समझ सके और यह बात दूरदृष्टि से पकड़ सके कि वित्तीय पूँजी आखिरकार पूँजीवाद के घनघोर संकट को न्यौता देगी, जो आज साफ तौर पर देखा जा रहा है। अब आये दिन की घटनाएँ मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्टालिन की क्रान्तिकारी विचारधारा की सत्यता को साबित कर रही हैं। इसलिए, रूस के मौजूदा बुर्जुआ शासकों को लेनिन नाम का आतंक सता रहा है। उन्हें डर है कि कहीं महान लेनिन की बेजान देह ही समाजवाद की पूर्ववर्ती भूमि के लोगों के मन में फिर इन्कंलाब की चिंगारी न जला दे।

केवल दुनिया भर के कम्युनिस्टों से ही नहीं, बल्कि जो लोग असली आजादी और लोकतंत्र के पक्षधर हैं, युद्ध के नहीं, बल्कि शान्ति के पक्षधर हैं और जो साम्राज्यवादी शोषण, आक्रमण और दमन के खिलाफ हैं, उन सबसे भी हम अपील करते हैं कि वे पुतिन-नीत रूस के पूँजीवादी शासकों के इस तरह के कुत्सित प्रयास की भर्त्सना करें और उन्हें इस घिनौनी कार्रवाई से बाज आने के लिए मजबूर करने के लिए अपने-अपने देश में जोरदार जनमत तैयार करें।

कोलकाता, जून 2012

(प्रतिदिन हस्ताक्षरों की संख्या बढ़ती जा रही है, यह संख्या हजारों से ऊपर पहुँच गई है। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ पाकिस्तान, फलस्तीन की कम्युनिस्ट पार्टी, चीली की कम्युनिस्ट पार्टी, बांग्लादेश समाजतांत्रिक दल, रूस, चीन, कनाडा, फिनलैण्ड, ग्रीस, स्वीडन, फ्रांस से हस्ताक्षर जमा हुए हैं।)

हस्ताक्षर करें

www.handsofflenin.org

कम्युनिस्ट आचरण-विधि

-शिवदास घोष

कार्यकर्ताओं की इस सभा में चर्चा का विषय है: जनता की क्रान्तिकारी चेतना व क्रान्तिकारी संगठन को विकसित व मजबूत करने के लिए एवं पार्टी के समग्र हित में हमारे उद्देश्य एवं विचारधारा से मेल खाती हुई आचरण-विधि (कोड ऑफ कन्डक्ट) क्या हो जिसे नेतृत्वकारी संगठक से लेकर पार्टी के आम सदस्य तक, सभी मान कर चलें।

कुछ साथियों के मन में सवाल उठ सकता है कि हठात् आजकल हम कम्युनिस्ट आचरण-विधि पर इतना जोर क्यों दे रहे हैं? इसकी वजह यह है कि हम काफी आश्चर्य के साथ एक बात देख रहे हैं कि जहाँ तक हमारे देश की तथाकथित पुरानी कम्युनिस्ट पार्टियों का सवाल है, उनके लिए आचरण-विधि का पालन करना प्राय: बीते दिनों की बात हो चुकी है। इन पार्टियों के कार्यकर्ताओं में आचरण-विधि की जो थोड़ी बहुत धारणा अभी भी मौजूद है-वह भी मूलत: नीति-नैतिकता की बुर्जुआ भावना-धारणा से ही प्रभावित व संचालित है जो सर्वांगीण संकट और व्यक्तिवाद के चरम विकास के इस युग में इन पार्टियों में अन्तहीन समस्याएं और जटिलताएं पैदा कर रही है।

दूसरी ओर, पार्टी कार्यकर्ताओं का सामाजिक जीवन में सामान्य आचार-व्यवहार कैसा होना चाहिए-इस बात की इन पार्टियों ने जानबूझ कर अनदेखी की है। इन्होंने सदस्यता की पात्रता को मुख्यत: नारे लगाने, पोस्टर चिपकाने व पार्टी के निर्देशों का पालन करने तक ही सीमित कर डाला है। अर्थात् पोस्टर चिपकाने, नारे लगाने और पार्टी के निर्देशों को मानने मात्र से ही इन पार्टियों में सदस्य बना जा सकता है चाहे वह एक व्यक्ति के तौर पर अपने सामाजिक जीवन में या पार्टी के अन्दर कैसा भी आचरण क्यों न करे। वास्तव में यह बहुत खतरनाक बात है। यह व्यवहार न केवल पार्टी के अन्दर एकता एवं एकबद्धता को धीरे-धीरे कमजोर कर डालता है बल्कि साथ ही कम्युनिस्ट आदर्श यानी विचारधारा और नैतिक मूल्य-बोधों के बारे में जनता के मन में अनेक भ्रान्तियाँ पैदा करता है। केवल इतना ही नहीं, थोड़ा सा गौर करने से देखा जाएगा कि ये नेता और कार्यकर्ता जिस तरह का जीवन जीते हैं-अपनी इस जीवन शैली से, अपनी दिनचर्या से, जनता के साथ आचरण से, अपसी संबंध और प्रचार-शैली से क्रान्तिकारी विचारधारा एवं राजनीति की छवि और प्रतिष्ठा को ही जनता में धूमिल कर रहे हैं।

कोई पार्टी वास्तव में कम्युनिस्ट आचरण-विधि का पालन कर रही है या नहीं-इसे जाँचने का आधार यह नहीं हो सकता कि इसके पीछे कितना जन-समर्थन है। इस तरह से तर्क देना बिल्कुल लोगों को धोखा देने और उन्हें मूर्ख बनाने वाली बात है। यह तो सीधी सी बात है। इतिहास के पन्नों से आसानी से दिखाया जा सकता है कि अनेक बार कई प्रतिक्रियावादी पार्टियों और विचारधाराओं के पीछे भी लोगो की भीड़ खूब जुटी है और भारी समर्थन मिला है। उससे ही तो यह साबित नहीं हो जाता है कि वे विचारधाराएं सही थी या उन्होंने नीति-नैतिकता और रुचि-संस्कृति के किसी उन्नत स्तर को प्रतिबिम्बित किया था। ऐसा समझना-मानना ठीक नहीं है। बहरहाल मैं अभी यहाँ इस विषय पर चर्चा में नहीं जाना चाहता।

लेकिन कम्युनिस्टों को हमेशा यह याद रखना होगा कि क्रान्तिकारी विचारधारा व क्रान्तिकारी दृष्टिकोण में अच्छी तरह माहिर होने और पार्टी के क्रान्तिकारी कार्यक्रमों का सही क्रियान्वयन करने के अपने संघर्ष को संचालित करने के लिए कम्युनिस्ट आचरण-विधि को व्यवहार में लाने का संघर्ष परम महत्व का है और उससे भी बढ़कर एक और बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि अभियान व प्रचार-प्रोपागैण्डे के अलावा क्रान्तिकारी विचारधारा व सिद्धान्त के अनुरूप नेताओं व कार्यकर्ताओं का रुचिगत नैतिक व सांस्कृतिक आचरण ही लोगों में सर्वहारा राजनीति, क्रान्तिकारी विचारधारा एवं संस्कृति को ले जाने के लिए एक सशक्त वाहक का काम करता है। क्योंकि विशेषकर ये नेताओं व कार्यकर्ताओं के जीवन के उदाहरण ही होते हैं जिनसे लोग क्रान्तिकारी विचारधारा व आन्दोलनों की ओर पहले-पहल आकर्षित होते हैं और उसके बाद धीरे-धीरे क्रान्ति के सिद्धान्तों (थ्योरीज़) को समझने लगते हैं।

कम्युनिस्ट आचरण विधि के दो पहलू हैं। एक है पार्टी के अन्दर नेताओं व कार्यकर्ताओं के बीच आपसी सम्बन्ध कैसा हो? पार्टी-बॉडी के साथ कार्यकर्ताओं व नेताओं का सम्बन्ध क्या हो तथा नेताओं व कार्यकताओं के बीच अपसी चर्चा-बहस, आलोचना व सामान्य आचरण की रीति-नीति क्या हो? और सबसे ऊपर यह बात है कि नेताओं से लेकर कार्यकर्ता तक पार्टी में हर सदस्य का अपने व्यक्तिगत जीवन के हर क्षेत्र में दृष्टिकोण क्या हो?

दूसरा पहलू है, सामाजिक जीवन के व्यापक क्षेत्र में लोगों से आचार-व्यवहार में, जन-सम्पर्क में, लोगों के बीच रहकर उनके जन-संघर्षों को संगठित करते हुए, लोगों में क्रान्तिकारी चेतना जगाते हुए एवं उनके क्रान्तिकारी संगठन का निर्माण करते समय नेताओं और कार्यकर्ताओं का व्यवहार और जनता से घुलने-मिलने का तौर-तरीका क्या हो?

यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि कम्युनिस्ट विचारधारा और मूल्य-बोधों के बारे में लोगों में किसी समय जो अच्छी धारणा थी; भारत की इन तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के निम्न सांस्कृतिक स्तर, नैतिक संकोच (स्क्रूपल्स) के अभाव, दिनचर्या व व्यक्तिगत जीवन शैली की मेहरबानी से कम्युनिस्ट विचारधारा व नैतिक मूल्य-बोधों के बारे में वह उच्च धारणा लोगों के मन में आज काफी हद तक मलिन हो गई। मुश्किल यह है कि ये लोग 'कम्युनिस्ट' नाम लेकर चल रहे हैं और लोग इन्हें ही सही कम्युनिस्ट तथा इनके आचरण को ही वास्तविक कम्युनिस्ट आचरण मान बैठे हैं। चाहे ये और जो कुछ भी हों, असल में कम्युनिस्ट नहीं हैं बल्कि कम्युन्ज़िम का लबादा ओढ़े हुए हैं और इसी वजह से उनकी गलत राजनीति एवं व्यक्तिगत जीवन में सर्वथा गैर-मार्क्सवादी आचरण व दृष्टिकोण के चलते कम्युनिज़्म और कम्युनिस्ट नैतिक मूल्य-बोधों के बारे में जन-मानस में व्याप्त भ्रान्तियों की वर्तमान स्थिति पैदा हुई है।

इसलिए एक ओर हमारी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं द्वारा सही कम्युनिस्ट राजनीति की ईमानदारी से लगातार साधना करना जरूरी हो गया है तथा दूसरी ओर अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में कम्युनिस्ट आचरण-विधि का ईमानदारी से पालन करना जरूरी हो गया है। इसे कर पाने से ही लोगों के लिए यह आसानी से समझ पाना सम्भव होगा कि कम्युनिज़्म आज की दुनिया में किसी भी अन्य विचारधारा से एक ऊँची, एक महान और उन्नत विचारधारा है एवं वही हर तरह के सामाजिक अन्यायों व शोषण से मुक्त एक उन्नत समाज-व्यवस्था कायम करने में सक्षम है।

एक ही व्याख्यान में आरण-विधि के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करना सम्भव नहीं है। फिर भी मैं उन कुछ मुख्य पहलुओं पर प्रकाश डालूँगा जो हमारी पार्टी में एकता को बनाए रखने के लिए जरूरी हैं और हमारे लिए जो इस समय अत्यन्त आवश्यक है।

पहले, मैं एक पहलू को विस्तार से लेना चाहता हूँ। प्राय: यह देखा गया है कि जब हम पार्टी के अन्दर पार्टी की किसी नीति (लाइन) या किसी कॉमरेड की आलोचना करते हैं तो आम तौर पर आलोचना-समालोचना की किसी भी नीति-सिद्धान्त का पालन नहीं करते हैं। निस्सन्देह मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि पार्टी के अन्दर चर्चा-बहस या आलोचना को बन्द कर दिया जाए। यह तो सवाल ही नहीं उठता। बल्कि पार्टी में चर्चा, बहस व आलोचना हमेशा चलती रहेगी एवं हमेशा यह खुले मन से और उन्मुक्त परिवेश में होनी चाहिए। इसे हरगिज बन्द नहीं किया जा सकता और करना भी नहीं चाहिए क्योंकि इसे बन्द कर देने से निश्चय ही पार्टी का स्वास्थ्य नष्ट हो जाएगा। लेकिन साथ ही चर्चाएं व आलोचनाएं करने में अगर कोई सिद्धान्त और निश्चित पद्धति ही न रहे अर्थात् अगर ये पार्टी के चिन्तन, विचारधारा और उद्देश्य से मेल ही न खाती हो, नेताओं व कार्यकर्ताओं के बीच एकता और एकबद्धता (कोहैज़न) को मजबूत करने में मददगार न हों और न ही ये पार्टी संगठन व जन-संघर्षों को मजबूत बनाने के लिए पार्टी कार्यक्रमों को कार्यरूप देने में मदद पहुँचाती हों बल्कि उल्टे सन्देह और अविश्वास पैदा करती हों और इस तरह सामान्यत: कॉमरेडों में निष्क्रियता और अकर्मण्यता के मनोभाव को पैदा करती हों तो समझना होगा कि इस प्रकार की चर्चाएं और आलोचनाएं निश्चय ही नीतिहीन हैं और ऐसी आलोचनाएं अभीष्ट प्रयोजन यानी मूल उद्देश्य को ही व्यर्थ कर देती हैं।

कॉमरेडों को यह ध्यान में रखना जरूरी है कि एक कम्युनिस्ट के लिए किसी चर्चा या आलोचना का वास्तविक प्रयोजन, तात्पर्य और उद्देश्य क्या है? आलोचना का पहला उद्देश्य यह होना चाहिए कि किसी दूसरे की आलोचना करते हुए अगर आलोचक के अपने अन्दर भी कोई गलती रहे तो ऐसी आलोचना के दौरान अनजाने में ही आलोचक को अपनी गलती को सुधारने का भी मौका मिला जाता है। साथ ही साथ यह भी याद रखना जरूरी है कि आलोचक के लिए आलोचना का यह उद्देश्य भी रहना चाहिए कि आलोचना करते हुए आलोचक की कोई बात अनजाने में गलत हो तो आलोचना करते हुए उसे सुधारने का भी मौका मिलता है।

इसका दूसरा उद्देश्य यह होना चाहिए कि पार्टी और क्रान्ति के समग्र हित में दूसरों की गलती को भी सुधारना एवं पार्टी की एकता की रक्षा के लिए क्रान्तिकारी सिद्धान्त, क्रान्तिकारी राजनीति, विचारधारा व उद्देश्य की सही समझ और उसकी सही प्रयोग पद्धति के बारे में नेताओं, कार्यकर्ताओं व जनता को शिक्षित करना। इसके अलावा नेताओं कार्यकताओं को इसमें भी सही तरीके से शिक्षित करना कि जनता को सम्मिलित करते हुए कैसे क्रान्ति के हित में मिल कर काम किया जाता है। क्रान्तिकारियों के लिए, कम्युनिस्टों के लिए आलोचना की यही जरूरत है और एकमात्र यही काम की बात है जिसके लिए आलोचना की जाती है। क्रान्तिकारियों के लिए आलोचना का सही तरीका है-पहले आत्म-आलोचना करना और फिर दूसरे की आलोचना करना। अर्थात् केवल पहले स्वयं की अपनी आलोचना करना, साथ-साथ सामान्यत: पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना और इन नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने में विभिन्न नेताओं व कार्यकर्ताओं की भूमिका व आचरण की आलोचना करना। आलोचना केवल तभी क्रान्ति के लिए वास्तव में सहायक बनती है जब यह आत्मालोचना की मनोभावना पर आधारित हो।

यदि किसी मामले में पाया जाता है कि आलोचना किसी पद्धति या नीति के अनुसार नहीं हो रही है तो अभिव्यक्ति देखने में कितनी ही सुन्दर क्यों न लगे, थोड़ा-सा आलोचनात्मक विश्लेषण करने पर निश्चय ही दिखाई दे देगा कि किसी व्यक्तिगत विक्षोभ, शिकायत या असन्तोष के कारण आलोचना इस तरह का रूप ले रही है। निश्चय ही, अधिकांश मामलों में, यहाँ तक कि जब कभी जमा विक्षोभ फूट पड़ता है, तब भी यही पाया जाता है कि कॉमरेड ऐसा न तो जानबूझकर करते हैं और न ही बदनीयत से करते हैं। उचित पार्टी शिक्षा व सही चिन्तन की कमी के कारण वे इस गलती के शिकार हो जाते हैं और एक बार इसमें फंस जाने के बाद वे अन्तत: एक गलत प्रक्रिया के शिकार बन जाते हैं।

इस तरह जब कॉमरेड लोग इस रुझान के शिकार हो जाते हैं तो वे अपनी आलोचना के ढंग को कितना ही ठीक क्यों न सोंचे वे यह कभी समझ नहीं पाते हैं कि उनकी मानसिकता और गतिविधियाँ पार्टी-विरोधी चरित्र अख्तियार कर लेती है। यह पार्टी की एकता को कमजोर करता है और विशेषकर पार्टी में नेतृत्व-सम्बन्धी सही धारणा यानी अथोरिटी-बोध के विकसित होने की प्रक्रिया में बाधा पैदा करता है-भले ही वे स्वयं भी ऐसा नहीं चाहते हैं। ऐसे मामले में यह तर्क देकर कि नेतृत्व का अन्धानुसरण नहीं करना चाहिए-इसलिए पार्टी को मदद करने के लिए आलोचना जरूरी है-वे प्राय: आपस में नीतिहीन खुसर-फुसर, चर्चा व आलोचना करने लग जाते हैं। ऐसे मामलों में एक अजीब संयोग यह घटता है कि जो कॉमरेड असन्तुष्ट हैं उन्हें

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आचरण विधि...

(पृष्ठ 3 का शेष)

अन्य असन्तुष्टों में अनेक दोस्त मिल जाते हैं। इस तरह अपने मन में व्यक्तिगत विक्षोभ रखने वालों में एक घनिष्टता पैदा हो जाती है। यह साझा असन्तोष व विक्षोभ ही उन्हें आपस में करीब ला देता है।

एक और दूसरे ढंग की आलोचना होती है जिसे पार्टी के वे अच्छे कॉमरेड लोग पसन्द करते हैं जिनकी सहज वर्ग-प्रवृत्ति (क्लास-इंस्टिंक्ट) बहुत तेज हैं। वे लोग आलोचना सुनकर तुरन्त भाँप जाते हैं कि अमुक आलोचना इस तरह की नहीं है जो क्रान्ति और पार्टी की सहायक हो। यद्यपि इस तरह की आलोचना 'पार्टी-हित' के नाम पर की जाती है फिर भी वे कॉमरेड आसानी से ताड़ जाते हैं कि असल में इस आलोचना के पीछे कोई न कोई व्यक्तिगत कारण या असन्तोष काम कर रहा है और इसी कारण से आलोचना करने वाला वह कॉमरेड पार्टी की नीति या नियम पद्धति के अनुसार आलोचना नहीं कर रहा है। ईमानदार और वर्ग-सचेत कॉमरेड भी पार्टी में आलोचना करते हैं लेकिन जहाँ-तहाँ या हर जगह वे ऐसा नहीं करते। वे अच्छी तरह समझते हैं बल्कि यूँ कहें कि वर्ग-प्रवृत्ति से महसूस करते हैं कि कहाँ पर आलोचना की जानी चाहिए और कहाँ नहीं। लेकिन कुछ कॉमरेड इस नियम-पद्धति को मानकर नहीं चलते। जैसा कि मैंने पहले कहा कि सम्भवत: भले ही वे अचेत रूप से या अनजाने में ही ऐसा करते हों किन्तु फिर भी तो इसका नतीजा खतरनाक होता है। वे अपने लिए खतरे मोल लेते हैं। ईमानदार व्यक्ति होने पर भी गलत प्रक्रिया का शिकार होने पर नुकसान तो होता ही है।

मार्क्सवादी या द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी होने के नाते हम लोग जानते हैं कि चूँकि हम ऐसा चाहते हैं या सोचते हैं इसलिए हमारे मात्र चाहने से ही हम वैसा नहीं बन जाते। हम वैसा बन पाएंगे या नहीं—यह पूर्ण रूप से इस बात पर निर्भर है कि हम उस विशिष्ट परिस्थिति में वास्तविक जीवन में उस विज्ञान-सम्मत पद्धति का सही अनुसरण कर रहे हैं या नहीं—जो इसके लिए एकमात्र रास्ता या वैज्ञानिक प्रक्रिया है और जो हमें वैसा बनने में सक्षम बनाती हैं जैसा हम बनना चाहते हैं।

कॉमरेडों को याद रखना होगा कि केवल पण्डिताऊपन या किताबी ज्ञान इस खतरे से हमारी रक्षा नही कर सकता। यही वजह है कि केवल बहुत किताबें पढ़ना या पण्डिताऊपन हमें सवालों और समस्याओं का सही समाधान प्रदान नहीं कर सकता है। उस विशेष समय और परिवेश में देश के अन्दर क्रान्तिकारी संघर्ष और पार्टी-संगठन जिस स्तर पर रहता है उसके परिप्रेक्ष्य में साधारण कॉमरेडों की वैचारिक-चेतना के स्तर और पार्टी से बाहर जो विशाल जनता है उसकी राजनीतिक चेतना के स्तर एवं सांस्कृतिक स्तर का सही-सही आंकलन करने के बाद पार्टी के क्रान्तिकारी सिद्धान्त या तत्वों को जिन्दगी के हर क्षेत्र में जब कोई सही ढंग से प्रयोग करता है केवल तभी हम जो बनना चाहते हैं वह हो पाएंगे।

यहाँ व्यक्तिगत आचरण की छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा करना या इनसे उदासीन रहना भी एक भारी भूल है। लेकिन जिस तरह यह बात ठीक है वैसे ही यह भी याद रखना उतना ही जरूरी है कि सामूहिक क्रियाकलाप व आचरण में आलोचना या चर्चा-बहस के दौरान संगठन के समग्र हित को अनदेखा करना और बात का बतंगड़ बनाना यानी किसी कॉमरेड के व्यक्तिगत आचरण की छोटी-मोटी कमियों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना भी हानिकारक है—यद्यपि व्यक्तिगत तौर पर हर क्रान्तिकारी के लिए स्वयं के अपने आचरण की आलोचना पर ध्यान देना बहुत जरूरी विषय होना चाहिए। यह समझना होगा कि किताब पढ़कर यानी मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन आदि नेताओं और विचारकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को उन के ग्रंथों में से पढ़कर हम जो ज्ञान हासिल करते हैं वह मार्क्सवादी सिद्धान्त-तत्वों की केवल एक सामान्य रूपरेखा मात्र है, एक मामूली सा पहलू है। लेकिन किताब पढ़कर जो ज्ञान हम हासिल करते हैं—क्या वही असली ज्ञान है? नहीं, यह असली ज्ञान नहीं है। हमारे देश में जो भी अंग्रेजी का ज्ञाता है यह सब छ: महीनों में पढ़ और जान सकता है। इस दौरान एक व्यक्ति थोड़ी-सी चेष्टा करने पर ऐसा बहुत कुछ कण्ठस्थ भी कर सकता है। परन्तु इससे क्या यह साबित हो जाता है कि वह एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी सिद्धान्तकार है? हो सकता है जिस कॉमरेड ने अभी इतनी सारी किताबें नहीं पढ़ी या जिसे पढ़ने का मौका नहीं मिला उससे कहीं ज्यादा ये महाशय किताबों में छपे सिद्धान्त-तत्वों को अच्छी तरह से हूबहू दोहरा सकते हैं और वे बता सकते हैं कि कब कौन-सी किताब में लेनिन ने क्या कहा है या माओ की कौन-सी कोटेशन (उद्धरण) किस किताब में किस पृष्ठ पर लिखी हुई है। लेकिन इससे क्या यह प्रमाणित हो जाता है कि असल में ही वे बहुत बड़े ज्ञानी हैं? यह विचारने का कोई मापदण्ड नहीं हो सकता है क्योंकि बहुत बार देखा जाता है कि कोई कॉमरेड जिन्होनें बेशक मार्क्सवादी साहित्य की बहुत ज्यादा किताबें नहीं पढ़ी हैं लेकिन वे जानते हैं कि किस तरह जन-आन्दोलन संगठित किया जाता है, कैसे पार्टी एकता को बनाए रखा जाता है, सामूहिक रूप से कैसे काम किया जाता है और सबसे बढ़कर यह कि व्यक्तिगत रूप में क्रान्तिकारी के नाते किस तरह आचरण करना चाहिए। अर्थात् उन्हें पता है कि सही कम्युनिस्ट की आचरण विधि क्या है और वे उसी के अनुसार आचरण करते हैं।

लेकिन दूसरा एक कॉमरेड जो इतनी किताबें पढ़कर, इतनी सारी खबरें व सूचनाएं रखते हुए भी यह नहीं जानता कि एक क्रान्तिकारी को किस ढंग से आचरण-व्यवहार करना चाहिए। बल्कि अक्सर देखने को मिलता है कि जिन्होंने अनेक किताबें पढ़ी हैं वे तुरन्त यहाँ-वहाँ का हवाला (रेफरेन्स) तो दे सकते हैं या जरूरत के अनुसार कोई भी कोटेशन या उद्धरण बोल सकते हैं। इसके फलस्वरूप कॉमरेडों और आम जनता की चेतना का स्तर नीचा रहने के चलते आभास होगा कि उनके वक्तव्यों व बातों की खूब तारीफ भी होती है। लेकिन क्रान्तिकारी सिद्धान्तों की समझ बहुत छिछली होने के कारण पार्टी लाइन की कारगर ढंग से मर्यादा बनाए रखने की बजाए उनकी सब चर्चाएं अनिवार्यत: अस्पष्ट रहेंगी और हवालों के बोझ के नीचे अपनी कारगरता खो बैठेंगी।

दूसरी ओर उस कॉमरेड की चर्चाएं जिसने क्रान्तिकारी सिद्धान्त-तत्व को अच्छी तरह समझ लिया है, इतने हवाले न दे सकने पर भी दूसरों के क्रान्तिकारी चरित्र के निर्माण तथा राजनीतिक चेतना को विकसित करने में और पार्टी लाइन को कारगर ढंग से प्रतिष्ठित करने में इनका वक्तव्य ज्यादा प्रभावकारी होता है। बताइए, फिर इनमें से कौन सच्चा ज्ञानी माना जाएगा? क्या वह जो बहुत खबर रखता है और सूचनाएं पेश कर सकता है? या क्या वह जो अभी इतनी खबरें-सूचनाएं तो नहीं रखता लेकिन जिस उद्देश्य के लिए यह सब खबरें रखना जरूरी है उसका मूल सार समझ चुका है? दर-असल दूसरा कॉमरेड ही सच्चा ज्ञानी है जिसने सही पार्टी-संस्कृति के सुर (ट्यून) को हासिल कर लिया है, सही वर्ग-दृष्टिकोण को अपना लिया है और जिसमें क्रान्तिकारी चेतना की ठोस अभिव्यक्ति झलकती है और सही वर्ग-व्यवहार को हासिल कर लिया है और ये वैसा ही पेश आते है।

मेरी इस आलोचना से कोई यह न समझ ले कि मैं किताब पढ़ने की आदत को हतोत्साहित कर रहा हूँ या मैं यह कह रहा हूँ कि पढ़ना बेकार है। बल्कि मैं समझता हूँ कि पढ़ने की काफी जरूरत है। लेकिन क्रान्तिकारी सिद्धान्त को आत्मसात किए बिना और क्रान्तिकारी चरित्र को हासिल कर पाए बिना सिर्फ किताब पढ़ना बहुत बार केवल किताबी ज्ञान को ही जन्म देता है; क्रान्तिकारी चरित्र हासिल करने की जो सम्भावना थी उसे भी वह नष्ट कर देता है। जिसके लिए उसने पढ़ाई-लिखाई की थी—उस क्रान्तिकारी प्रयोजन को ही वह हासिल नहीं कर पाता है। इसके अलावा पार्टी में ज्ञान प्राप्त करने की सही प्रक्रिया न रहने से अनिवार्यत: पढ़ाकू लोगों में एक तरह की अहंकार की 'भावना' (सुपीरिअर्टी कॉम्प्लैक्स)—हम बड़े हैं' की मनोभावना पैदा हो जाती है और दूसरी ओर पढ़-लिख न पाने वाले लोगों में एक तरह की हीन-भावना (इनफीरिअर्टी कॉम्प्लैक्स) पैदा हो जाती है। सही कम्युनिस्ट चरित्र-निर्माण के संघर्ष में ये दोनों ही जबरदस्त बाधाएं हैं।

इस प्रसंग में याद रखें कि परिवेश या पास्परिक संघर्ष से नाता तोड़कर, केवल किताब पढ़कर कोई अपने-आप अकेले-अकेले क्रान्तिकारी नहीं बन सकता है। क्रान्तिकारी बनने के लिए पार्टी जीवन के हर पहलू में संघर्ष के साथ सचेत रूप से अपने-आप को जोड़ना होगा और उसका अंगीभूत होना होगा। क्योंकि याद रखें कि क्रान्ति की सही समझदारी के अन्दर ही आज वर्ग-सचेत होने का सवाल अन्तर्निहित है। वर्ग चेतना ही क्रान्तिकारी चेतना की ठोस अभिव्यक्ति है। तो यह स्पष्ट है कि क्रान्ति के प्रति वफादार होने के मायने हैं वर्ग के प्रति संदेहातीत वफादारी। वर्ग के प्रति वफादारी होने की सही ठोस अभिव्यक्ति क्या है? वर्ग के प्रति वफादारी की ठोस अभिव्यक्ति है सर्वहारा वर्ग की पार्टी के प्रति अडिग वफादारी। इसलिए वर्ग और वर्ग-पार्टी के प्रति अविचल वफादारी और असीम प्यार ही वर्ग-चेतना और वर्ग समझदारी की ठोस अभिव्यक्ति है। इस प्रकार असली ज्ञान और सही क्रान्तिकारी चेतना की प्राप्ति का मायने है सच्ची मजदूर वर्ग की पार्टी चेतना को ठीक तरह से समझना और वर्ग-हित एवं पार्टी-हित के साथ अपने व्यक्तिगत हित को पूर्ण रूप से एकात्म (आइडेन्टीफाई) कर देना। कम से कम रोजमर्रे के जीवन में तो वर्ग एवं पार्टी हितों को व्यक्तिगत यानी खुद के हित से ऊपर स्थान देना, प्राथमिकता देना।

यह तो हो ही सकता है कि वास्तविक जीवन और संघर्ष से क्रान्ति की इन मूलभूत और आवश्यक शिक्षाओं को हासिल करने के बाद भी कोई कॉमरेड तथ्य और तरह-तरह की खबरें रखने में कमजोर है या वह पीछे है। ऐसे ज्ञान के सूचनामूलक चरित्र का मैं बार-बार जिक्र कर रहा हूँ क्योंकि हमारे देश में ज्यादा खबरें रखने वाले आदमी को अधिकांश लोग ज्ञानी समझ लेते हैं। हो सकता है कि ये लोग कुछ बातों के बारे में ज्यादा खबर रखते हैं। लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि वे सर्वहारा वर्ग की राजनीति, इसके वर्ग-दृष्टिकोण, पार्टी और जन-संगठनों को संगठित करने के तरीकों या क्रान्तिकारियों की आचरण-विधि के बारे में भी ज्यादा समझ रखते हैं। थोड़ा-सा मिलान करने पर कोई भी स्पष्ट देख सकता है कि इन दोनों में काफी फर्क है ये दोनों बिल्कुल अलग-अलग बातें हैं इस तरह यह स्पष्ट है कि क्रान्तिकारी आचरण-विधि की समझ हासिल होने की मूल शर्त है क्रान्ति के साथ, वर्ग और पार्टी के साथ अपने आपको एकात्म करने के लिए संघर्ष चलाना। व्यक्तिवाद और अंह-बोध (इगो) हमेशा हमें जाने या अनजाने भ्रमित करने और गलत दिशा में भटकाने की ओर उन्मुख करता है। यह हमें असन्तुष्ट, चिड़चिड़ा और बेचैन बनने की ओर प्रवृत्त करता है। जिसमें क्रान्ति, वर्ग व पार्टी के साथ अपने आपको एकात्म करने का संघर्ष जितना तेज है वह उतना ही अपने व्यक्तिवाद और अहं-बोध से मुक्त हो सकता है। यही है व्यक्तिवाद से लड़ने का कारगर औजार और चूंकि मनुष्य के मस्तिष्क की सोचने की प्रक्रिया व्यक्तिगत है इसीलिए पार्टी के साथ एकात्म होने का संघर्ष हम सबके लिए बहुत जरूरी है। यदि कोई इस संघर्ष में पीछे रह जाता है तो बाहर के परिवेश से उसने कितनी भी शिक्षा व अनुभव क्यों न पाई हो; व्यक्तिवाद के कुप्रभाव से वह अपने-आपको मुक्त नहीं कर पाएगा।

इस संदर्भ में एक और विषय पर कुछ चर्चा की जरूरत है। पार्टी के अन्दर आलोचना या चर्चा करते समय कई कॉमरेड 'अधिकार' की बात करते हैं। लेकिन नीतिशास्त्र (एथिक्स) का जिन्हें जरा भी बोध है वे निश्चित तौर पर यह मानेंगे कि 'दायित्व' (ऑब्लीगेशन) के बिना 'अधिकार' (राइट) की बात बेमायनी है और यह चरम अनुशासनहीनता एवं विशेष सुविधा-मात्र है। किन्तु दूसरों की आलोचना करते समय कितने कॉमरेड इस समझ को प्रतिबिम्बित करते हैं? कुछ कॉमरेड ऐसे हैं जो किसी भी बात पर और कहीं भी अपना मत व्यक्त करने में कभी आगा-पीछा नहीं देखते और ऐसा करते समय वे न्यूनतम क्रान्तिकारी विनम्रता तक को बनाए रखने का भी कष्ट नहीं करते हैं। इसके अलावा वे खुद से एक बार भी प्रश्न नहीं करते कि पार्टी और क्रान्ति के प्रति वे कौन-सी जिम्मेदारी निभा रहे हैं? क्या इस मापदण्ड से उन्होंने कभी अपने आपको तोलकर देखा है कि इतना अधिकार उनका बनता भी है या नहीं? अगर एक बार भी उन्होंने अपने आचरण का विश्लेषण किया होता तो उन्हें निश्चित तौर पर समझ में आ जाता कि अगर इनकी सैद्धान्तिक समझ व पार्टी के प्रति कर्त्तव्य-बोध यथेष्ठ होता तो उनके कार्यकलाप, व्यवहार और पार्टी के साथ एकात्म होने के संघर्ष के हर कदम में यह प्रतिबिम्बित होता। लेकिन इसकी उन्होंने कभी परवाह ही नहीं की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आँगनवाड़ी बच्चों की मौत

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने धिक्कार दिवस मनाया

कटक: दीवार ढहने से हुई 7 बच्चों की मौत की जिम्मेदार सरकार और प्रशासनिक अधिकारियों को कड़ी सजा देने मृतकों के परिवारों को 50-50 लाख रुपये मुआवजा देने, आँगनवाड़ी केन्द्रों व स्कूलों के लिए पक्के और सुरक्षित कमरे बनाने और राज्य के शिक्षण संस्थानों के लिए सभी आवश्यक जन-सुविधाएँ उपलब्ध कराने की माँग करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की कटक शहर कमेटी ने 13 जुलाई को कॉलेज चौक, कटक में अखिल ओडिशा धिक्कार दिवस मनाया।

इस अवसर पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा के सामने एक शहीद वेदी बनाई गई और सैकड़ों स्कूली छात्रों और आम लोगों ने इस हादसे में मारे गए बच्चों को पुष्पार्पित श्रद्धांजलि दी। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) कटक जिला सचिव कॉमरेड विश्वबसु दास, जिला कमेटी सदस्यों कॉमरेड्स खगेश्वर सेठी, गणेश त्रिपाठी और बेबी बालाबंटारे व अन्य कई साथी इस कार्यक्रम में मौजूद थे।

भुवनेश्वर (ओडिशा): नयागढ़ में दीवार ढहने से आँगनवाड़ी केन्द्र में मरने वाले बच्चों की संख्या बढ़कर 11 जुलाई तक 7 हो गई। ऐसे में ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) ने स्कूलों और आँगनवाड़ी केन्द्रों में कमजोर बुनियादी ढाँचे के लिए जिम्मेदार सरकारी प्रशासनिक अधिकारियों को कड़ी सजा देने, प्रत्येक मृतक बच्चे के परिवार को 10 लाख रुपये मुआवजा देने और सभी स्कूलों व आँगनवाड़ी केन्द्रों में पर्याप्त मजबूत बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने की माँग को लेकर राज्यव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया है। इस आन्दोलन के क्रम में खुर्दा, जरका, अंगुल, बलंगीर में विरोध सभाएं की गई और भोगराई व राऊरकेला में जनप्रतिनिधि मण्डल भी भेजे गए। भुवनेश्वर में एआईडीएसओ ओडिशा राज्य अध्यक्ष कॉ. अक्षय दास, राज्य सचिव कॉ. शिवाशीष प्रहराज व सचिव मण्डल सदस्य कॉ. सिद्धार्थ रथ व बेबी बाला बंटोरे के नेतृत्व में छात्रों ने ओडिशा राज्य सचिवालय के समक्ष प्रदर्शन किया। प्रतिनिधि मण्डल ने उपरोक्त मांगों को लेकर एक ज्ञापन महिला व बाल कल्याण मंत्री को सौंपा। विरोध सभा में वक्ताओं ने कहा कि अपने खुद के कमरे उपलब्ध न होने की वजह से आँगनवाड़ी कर्मियों को सामुदायिक केन्द्रों, प्राइमरी स्कूलों, क्लबों और जर्जर इमारतों में आँगनवाड़ी केन्द्र चलाने के लिए मजबूर किया जा रहा है। ग्रामीणों, आँगनवाड़ी कर्मियों और अध्यापकों ने स्कूलों के क्लास रूमों की जर्जर हालत की बाबत अपनी आवाज बार-बार उठाई है। लेकिन सरकार और प्रशासनिक अधिकारियों की निष्ठुरता की वजह से इस तरह की त्रासदीपूर्ण दुर्घटना घटी। एआईडीएसओ ने छात्रों और जीवन के हर क्षेत्र के शिक्षा प्रेमी लोगों से अनुरोध किया कि उपरोक्त माँगों को पूरा करने के लिए सरकार को मजबूर करने हेतु दीर्घस्थाई जनआन्दोलन गठित करें।

नशे पर पाबन्दी की मांग पर एकजुट हुई महिलाएं

जोया (उ.प्र.): शराब, गुटका, पान मसाला व अन्य नशीले पदार्थों की नशाखोरी को बढ़ावा देने के विरोध में ग्राम अखबन्दपुर, जिला भीम नगर, उत्तर प्रदेश में 1 जुलाई को महिलाओं के संगठन ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) के तत्वावधान में महिलाओं की एक महत्वपूर्ण सभा हुई। सभा की अध्यक्षता इसी गाँव की पूर्व प्रधान श्रीमती भाग्यवती ने की। मुख्य वक्ता थी एआईएमएसएस की उत्तर प्रदेश कमेटी अध्यक्षा कॉ. रश्मि मालवीय। सभा का प्रारम्भ शील कुमार, नरेन्द्र व सिद्धराज सिंह के क्रान्तिकारी गीतों से हुआ। सभा में एसयूसीआई (सी) के जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार के अलावा कमलेश चाहल, कौशल्या देवी, हरकिशोर, शशि, शकुन्तला, सुधा आदि ने भी अपने विचार रखे।

सभा की मुख्य वक्ता कॉ. रश्मि मालवीय ने अपने भाषण में कहा कि सरकारों की जनविरोधी आबकारी नीति के चलते शराब व अन्य सभी प्रकार के नशीले पदार्थों की धड़ल्ले से हो रही बिक्री की मार महिलाओं को झेलनी पड़ रही है। युवा पीढ़ी को नशे के गर्त में ध केल कर बर्बाद किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शराब पीने वाले व शराब बेचने वाले तो दोषी हैं ही, किन्तु इस कुकृत्य के लिए सबसे बड़े दोषी हैं शराब को बिकवाने वाले अर्थात राज्य सरकारें व केन्द्र सरकार। उन्होंने कहा कि नशाखोरी को बढ़ावा देने के कारण समाज में महिलाओं का जीवन नर्क बन गया है। उन्हें प्रताड़ित, बेइज्जत करने के साथ उनके साथ छेड़छाड़ व बलात्कार जैसे घिनौने अपराध हो रहे है। उन्होंने कहा कि इससे मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है-सभी महिलाएं संगठित होकर एक विशाल जन-आन्दोलन का निर्माण करें। उन्होंने सभी महिलाओं से एआईएमएसएस को मजबूत करने का आह्वान किया। सभा में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास करके माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ के नाम भेजा गया। ज्ञापन में शराब, गुटका, पान मसाला व अन्य नशीले पदार्थों पर तुरन्त पाबन्दी लगाने की मांग की गई। अन्त में अध्यक्षा भाग्यवती के जोशीले भाषण के साथ सभा का समापन हुआ। तेरह सदस्यीय एक कमेटी भी गठित की गई।

बढ़ती महंगाई-बेरोजगारी के खिलाफ युवाओं का धरना-प्रदर्शन

मुरादाबाद (उ.प्र.): महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार अप-संस्कृति, नशाखोरी, शिक्षा व चिकित्सा के निजीकरण-व्यापारीकरण, महिलाओं व बच्चों पर लगातार बढ़ रहे अपराधों के खिलाफ 15 मई को मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में जिला अधिकारी कार्यालय, मुरादाबाद के सामने डीवाईओ की जिला कमेटी के नेतृत्व में धरना-प्रदर्शन किया गया और जिलाधिकारी, मुरादाबाद के माध्यम से एक ज्ञापन प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय अखिलेश यादव को भेजा गया। धरना-प्रदर्शन में बड़ी संख्या में संगठन के कार्यकर्ताओं व समर्थकों ने हिस्सा लिया। धरना-प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह ने कहा कि डीवाईओ, पूरे प्रदेश में युवाओं की समस्याओं को लेकर आन्दोलनरत है। बेरोजगारी की मार से युवा त्रस्त हैं। प्रदेश सरकार अपने वादे के बावजूद सभी बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता नहीं देना चाह रही है। तरह-तरह की बंदिशें लगाकर बेरोजगारी भत्ते से उन्हें महरूम किया जा रहा है। डीवाईओ ने इसका विरोध किया है। उन्होंने सबको रोजगार देने सहित विभिन्न मांगों को लेकर एक जुझारू आन्दोलन का निर्माण करने का युवाओं से आह्वान किया। प्रदर्शनकारियों को विनोद विग एडवोकेट, सतीश स्वरूप भटनागर एडवोकेट, मौ. हनीफ, धर्मपाल सैनी, कुलवन्त सिंह, मौ. यामीन, प्रमोद कंसल, प्रदीप वालिया, मौ. अफजल आदि ने सम्बोधित किया।

जनता के विरोध के बावजूद भारत सरकार परमाणु संयंत्र लगाने पर अमादा क्यों

जापान की होक्काइडो इलेक्ट्रिक पॉवर कम्पनी ने 6 मई को तोमारी प्लाण्ट की अन्तिम परमाणु बिजली भट्टी बन्द करने का एलान कर दिया है। जापान वासियों ने राहत की सांस ली है। लम्बे अर्से से जारी परमाणु बिजली-विरोधी आन्दोलन की जीत हुई है। दुनिया की तीसरे नम्बर की ताकतवर अर्थव्यवस्था वाले देश, उन्नत तकनीकी वाले देश जापान के लोग परमाणु भट्टी बन्द करवाने के लिए इतने व्यग्र क्यों थे? क्योंकि यह वही जापान है जहाँ दूसरे विश्वयुद्ध के समय हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु विस्फोट जैसा भयानक काण्ड हुआ था; यह वही जापान है जहाँ भयंकर सुनामी आने पर कुछ दिनों पहले ही फूकूशिमा-दाइची परमाणु बिजली घरों में भयंकर पारमाणविक विकिरण के खतरे की घटना घटी थी। दोनों घटनाओं में ही देश का बड़ा भारी नुकसान हुआ था। बहुत लोग मारे गए थे, विकलांग तो और भी ज्यादा लोग हुए थे। हिरोशिमा-नागासाकी में परमाणु बम विस्फोट का अभिशाप पीढ़ी दर पीढ़ी लोग आज तक भुगतते आ रहे हैं। अभी तक भी विकलांग बच्चे माताओं के गर्भ से पैदा हो रहे हैं। पर्यावरण को भी भारी क्षति पहुँची हैं। जल, खाद्य, जमीन सभी कुछ भयंकर रूप से दूषित हो गया है। एक के बाद एक पारमाणविक विकिरण के खतरे की डरावनी यादें उन्हें सता रही हैं। स्वाभाविक तौर पर ही जापान के लोग परमाणु परियोजना बन्द होने की खबर से बेहद खुश हैं। माँग पूरी हो जाने पर राजधानी टोकियो में हजारों हजार लोगों ने विजय जुलूस निकाला है।

परमाणु भट्टी के खिलाफ जापान के लोग लम्बे अर्से से जद्दोजहद करते आ रहे हैं। हाल ही में फूकूशिमा-दाइची के हादसे के बाद उनका आन्दोलन और भी तेज हो गया था। क्या हुआ था फूकूशिमा-दाइची परमाणु बिजली परियोजना में? 11 मार्च 2011 को भूकम्प के बाद जापान के तटवर्ती इलाकों में विनाशकारी सुनामी लहरें आई थी। इसके फलस्वरूप जापान के तटवर्ती इलाके में स्थित परमाणु संयंत्र की सुरक्षा की अत्यन्त आवश्यक शर्त, शीतलीकरण व्यवस्था गड़बड़ा गई थी। जल्दी से उसकी मरम्मत करने या काबू में लाने की सारी कोशिशें बेकार हो गई थी। इसके बाद अनियन्त्रित परमाणु विखण्डन के फलस्वरूप पैदा हुए ताप से वाष्पीकृत पानी ने एक के बाद दूसरे संयंत्र में विस्फोटों को अंजाम दिया था और खतरनाक रेडियोधर्मी विकिरण फैला दिया था। न्युक्लियर रिएक्टर से दूषित पानी सीधे समुद्र में चला गया था। उससे लम्बे चौड़े इलाके का पानी घातक रूप से दूषित हो गया और बहुत सारे समुद्री जीव मारे गए थे। जापान सरकार ने फूकूशिमा के चारों ओर 10 किलोमीटर के दायरे में आने वाले इलाके के सभी लोगों को घर छोड़कर सुरक्षित आश्रय स्थल पर चले जाने को कहा था। 30 किलामीटर के दायरे में बसे लोगों को घरों में बन्द रहने को कहा था। सरकारी आँकड़ों के हिसाब से 20 हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे। क्षतिग्रस्त हुए थे 1 लाख 40 हजार लोग। वैज्ञानिकों के मतानुसार इसके दूरगामी प्रभाव जीव कोशिकाओं के ध्वस्त होने, कोशिकाएं विकृत होने, गर्भस्थ भ्रूण नष्ट होने सहित यहाँ तक कि केन्सर, ल्यूकोमिया जैसे जानलेवा रोगों को भी पैदा करते हैं। मानव सभ्यता को यह बेहद नुकसान पहुँचाने वाली बात है।

आँखों के सामने परमाणु हादसा होने की ऐसी भयंकर मिसाल रहने के बावजूद दिल्ली में सत्तारूढ़ केन्द्र सरकार राज्य-राज्य में मौत को बुलावा देने वाले परमाणु संयंत्र लगाने की सीना तान कर पहल कर रही है। लेकिन जापान के परमाणु हादसे की डरावनी यादें इस देश के लोग भूल नहीं सकते। तमिलनाडु के कुडनकुलम से लेकर महाराष्ट्र के जैतपुर, पश्चिम बंगाल के हरिपुर और हरियाणा के गोरखपुर में भी लोग परमाणु बिजली घर बनाने के खिलाफ जोरदार आन्दोलन खड़ा कर रहे हैं। हरिपुर में परमाणु परियोजना तैयार करने में केवल केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने ही नहीं, बल्कि पश्चिम बंगाल की सत्तारूढ़ तत्कालीन सीपीआई(एम) मोर्चा सरकार ने भी अपनी आहूती दी थी।

16 मई को संसद में एक प्रश्नोत्तर काल में प्रधानमंत्री ने परमाणु बिजली के पक्ष में जबरदस्त वकालत की है। उन्होंने कहा है कि प्रचलित स्रोतों के अलावा अन्य स्रोतों से भी बिजली बनाने का मौका गवाँ दिया तो देश के लिए नुकसानदेह होगा। उनका कहना है कि भारत में चल रहे 19 परमाणु केन्द्रों में किसी तरह की कोई दुर्घटना नहीं घटी है और इस मामले में सुरक्षा के पुख्ता इन्तजाम हैं। सवाल उठता है कि तकनीकी क्षमता के मानदण्ड से जो जापान भारत से काफी आगे है और प्राकृतिक प्रकोप का मुकाबला करने में जिसकी तैयारियाँ अत्यन्त आधुनिक हैं, उस जापान को भी परमाणु भट्टी के 'मेल्टडाउन' अर्थात पिघलकर तहस नहस हो जाने के फलस्वरूप भयंकर परमाणु हादसे से क्यों रूबरू होना पड़ा था? फिर जापान की आबादी हादसे के समय 13 करोड़ से कुछ ज्यादा थी। जापान में भारत की तरह घनी बसासत भी नहीं है, इसलिए जाहिर है कि भारत में ऐसी घटना घटने पर क्षतिग्रस्त लोगों की संख्या जापान से भी ज्यादा बढ़ जाएगी। इसी बीच झारखण्ड के यदुगोड़ा की यूरेनियम खान अंचल या राजस्थान के पोखरण में परमाणु बम के विस्फोट स्थल से रेडियोधर्मी विकिरण के फलस्वरूप हजारों हजार लोग विकिरण जनित कष्ट भोग रहे हैं।

परमाणु बिजली घरों के पक्ष में यह दलील दी गई है कि दुनिया में कोयले और कच्चे तेल का भण्डार सीमित है, इसलिए शक्ति के वैकल्पिक स्रोत की जरूरत है। लेकिन हकीकत यह है कि रेडियोधर्मी ईन्धन सस्ता या सहज उपलब्ध नहीं है, उसका भण्डार भी इतना बेशुमार नहीं है कि कभी खत्म न हो। इस बिजली उत्पादन के खर्च के अन्दर अगर असल सुरक्षा खर्च को जोड़ लिया जाए तो देखा जाएगा कि परमाणु शक्ति का इस्तेमाल सस्ता नहीं पड़ता है। परमाणु बिजली की निहायत जरूरत समझाते हुए कहा जा रहा है कि तेल-गैस शक्ति का इस्तेमाल होने पर प्रचुर मात्रा में धुँआ और कार्बन युक्त गैस निकलेंगी जो परमाणु बिजली बनाने में नहीं निकलेंगी। दुनिया में शक्ति का सबसे बड़ा प्रचलित स्रोत थर्मल पॉवर अर्थात् ताप विद्युत है और इसके बाद जल-विद्युत है। वहीं परमाणु बिजली के बिना उन्नत तकनीकी से लैस देशों में काम ठप हो जाएंगे यह दलील चलने लायक नहीं है। वैकल्पिक शक्ति के अभाव में ये देश सभी क्षेत्रों में पंगु हो जाएंगे-ऐसी भी सम्भावना नहीं है। जर्मनी, इटली, स्विट्ज़रलैण्ड इसके ठोस सबूत हैं। परमाणु शक्ति में आत्म निर्भर होने के बावजूद वे विकल्प के तौर पर परम्परागत तौर पर प्रचलित शक्ति के स्रोतों की बात ही सोच रहे हैं।

परमाणु परियोजना की गड़बड़ी के अलावा परमाणु कचरा भी घातक रूप से खतरनाक है। यह जहाँ भी फेंका जाएगा, उस इलाके में हजारों साल तक विकिरण फैलाता रहेगा। पारमाणविक शक्ति के खतरे से अमेरिका वाकिफ है। इसलिए चुपचाप नेवादा पर्वत के पास परमाणु कचरा डाला गया था। जापान सरकार और टोकियो में इलेक्ट्रिक पॉवर कम्पनी टेपको ने भी इनके बीच हुए समझौते के आधार पर परमाणु शक्ति सम्बन्धी कई तथ्य छुपाकर रखे थे। परमाणु हादसा होने के बाद भी झूठे आँकड़े देकर उन्होंने जनसाधारण को आश्वस्त करना चाहा था।

फूकूशिमा विस्फोट के बाद प्रबल जनविक्षोभ के दबाव में जर्मनी ने भी अपने सभी परमाणु केन्द्र बन्द कर देने का फैसला लिया था। इससे पहले जर्मनी में परमाणु केन्द्रों से कुल खपत की 23% बिजली पैदा होती थी। उस देश की सरकार ने एलान किया है कि एक तरफ 2020 के मध्य तक 10% बिजली का इस्तेमाल कम किया जाएगा, साथ ही पुनर्नवीनीकरण योग्य शक्तियों का इस्तेमाल दुगुना करके 35% तक ले जाया जाएगा। जर्मनी के चांसलर ने कहा है कि 'हमें बिजली के इस्तेमाल को पूरा का पूरा बदल डालना होगा और यह करना सम्भव है। हमें भविष्य में सुरक्षित, निर्भर करने योग्य और साश्रयकारी बिजली इस्तेमाल करनी चाहिए।

जापान के खौफनाक तजुर्बे या जर्मनी की परमाणु भट्टी बन्द किए जाने के फैसले के बाद भी भारत परमाणु भट्टी लगाने के मामले में इतना आग्रही क्यों है? क्योंकि दुनिया में अपनी ताकत जताने के लिए भारत राष्ट्र को चाहिए परमाणु हथियारों का भण्डार। परमाणु हथियारों का अधिकारी होने के बावजूद 'परमाणु शक्तिधर' राष्ट्र के तौर पर भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता नहीं है। अमेरिका के साथ साँठ-गाँठ के आधार पर वह मान्यता भारत चाहता है, तभी तो 'महाशक्ति' का तमगा भारत को मिल पाएगा जो उसे पड़ोसी देशों व दूसरे कमजोर देशों पर आधिपत्य कायम करने में ज्यादा सहूलियत देगा। इसलिए परमाणु बिजली के जनता के संकट मोचक ठप्पे से अमेरिका से परमाणु भट्टी, परमाणु बम के लिए जरूरी भारी जल और तकनीकी आयात करने के लिए भारत इतना तत्पर है। इसमें दुनिया के पहले नम्बर के साम्राज्यवादी देश अमेरिका का भी फायदा है।

भारत-अमेरिकी परमाणु समझौते की एक अन्यतम शर्त के अनुसार इस देश में नए-नए परमाणु केन्द्रों की स्थापना के लिए जरूरी सामग्री अमेरिका से आयात करनी होगी। इसके फलस्वरूप अमेरिका को भी परमाणु भट्टियों का साजोसामान बेच कर अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का मौका मिलेगा। इसके साथ हमारे देश के जन कल्याण का कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन परमाणु विकिरण और परमाणु भट्टियों की किसी भी दुर्घटना से उसी जनता की जान-माल और सहारे खत्म हो जाऐंगे। इसलिए देश भर में परमाणु बिजली संयंत्र लगाने की कुचेष्टा का जगह-जगह इतना विरोध हो रहा है।

●●●

आचरण विधि...

(पृष्ठ 4 का शेष)

मगर क्या वे अपनी ओर से जान-बूझकर ऐसा करते होंगे? क्या वे सचेत रूप से ऐसा करते हैं? नहीं, ऐसी बात नहीं हैं।

इन चर्चाओं से किसी के मन में यह सवाल उठ सकता है कि अगर कोई पार्टी के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभा नहीं पाता है यानी पार्टी के काम को पूरे जोरशोर से नहीं कर पाता है तो क्या पार्टी के हित में यदि कोई अच्छी बात उस के मन में आए तो उसे वह नहीं बताए? मैं कहता हूँ कि वह उसे जरूर कहे। अगर किसी की आलोचना का नुक्ता सही है तो उससे पार्टी का हित ही होगा और पार्टी उनकी आभारी होगी। इसलिए अगर कोई पार्टी का काम उतना न भी करता हो किन्तु आलोचना करता है तो नेता लोग या कोई भी जिसके खिलाफ वह बात कही गई हो गुस्से से लाल-पीले हो जाते हैं, उत्तेजित हो जते हैं–यह ठीक नहीं है। इसके विपरीत किसी की भी ओर से यहाँ तक कि दुश्मन की ओर से भी यदि पार्टी के खिलाफ कोई आरोप या प्रश्न है तो हमें उसका भी सटीक जवाब देना होगा क्योंकि हम कमजोर नहीं हैं। हम झूठ के सहारे कुछ बातों को छिपा नहीं रहे हैं। सच्चाई को सामने लाना और समस्या की गहराई से छानबीन करना ही है हमारी एकमात्र चिन्ता। अत: दुश्मन की ओर से भी कोई अच्छी बात आती है तो उसे हम क्यों नहीं ग्रहण करेंगे? याद रखना होगा कि कोई भी आलोचक चाहे वह बाहर का कोई आदमी हो या पार्टी के अन्दर का कोई साथी हो या दुश्मन पक्ष का हो–हम उसे अपना शिक्षक मानते हैं।

इसलिए ऐसा कॉमरेड भी जो कुछ नहीं करता है केवल विक्षोभ व असन्तोष (ग्रम्बलिंग) व्यक्त करता रहता है और जो यह भी नहीं जानता कि ऐसा करके वह अपनी और पार्टी की सेहत को दूषित करने के सिवा और कुछ नहीं कर रहा है–वह भी यदि कुछ ऐसी बात उठाता है जो चर्चा के लायक हैं या पुनर्विचार करने लायक है तो हम उससे बात करने के हिमायती हैं। यहाँ यह सवाल उठाना बेतुका है कि चूँकि वह कॉमरेड पार्टी का काम तो करता नहीं, खाली असन्तोष एवं नाराजगी व्यक्त करता रहता है इसलिए उसे आलोचना करने का कोई अधिकार ही नहीं। इसके विपरीत हम उसी समय उस कॉमरेड का सवाल सुनना चाहेंगे और उसे प्रोत्साहित करना चाहेंगे; लेकिन यह तो है हमारे हिस्से की यानी नेतृत्व पक्ष की बात।

परन्तु में यहाँ जो दिखाना चाहता हूँ वह यह है कि जो कॉमरेड सवाल उठा रहे हैं और अधिकारों की बात कर रहे हैं–उनका क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? उनको देखना चाहिए कि दूसरों की आलाचना करने से पहले उन्हें खुद कुछ जिम्मेदारी भी जरूर निभानी चाहिए। उन्हें पहले सोचना होगा कि अगर उन्हीं की तरह असंख्य लोग जो अभी पार्टी के साथ पूर्णत: जुड़े नहीं हैं, न ही उन्होंने पार्टी की समस्याओं को गहराई से जानने-समझने की कोशिश की है या जो लोग अभी पार्टी-संगठन के अभिन्न अंग नहीं बने हैं और पार्टी की सजीव प्रक्रिया में नहीं आए हैं अगर वे सभी मिलकर एकदम नीति-सिद्धान्त को ताक पर रखकर पार्टी की आलोचना करनी शुरू कर दें तो क्या पार्टी की एकता एवं स्वास्थ्य बच पाएगा? और इससे उसका भी क्या कोई उपकार होगा? वे कॉमरेड यह नहीं समझते कि जिस 'अधिकार' के लिए वे लड़ रहे हैं पार्टी स्वयं उन्हें एक के बाद एक ये अधिकार दे रही है और यदि नहीं दिया तो लड़कर लेने या हासिल करने का अधिकार भी उनका है ही। यह भी हो सकता है कि पार्टी के कोई नेता जो कार्यकारी जिम्मेदारी में हैं, यानी संगठन के संचालन-कर्ता हैं वे किसी कार्यकर्ता के इस अधकार में थोड़ा-बहुत भी हस्तक्षेप एवं हनन करें–यह सम्भव है। चूँकि यह मजदूर वर्ग की पार्टी है इसलिए इसमें ऐसी खामी हो ही नहीं सकती–ऐसी बाते वे ही सोच सकते और कह सकते हैं, जिन्होंने कभी अपने हाथों से संगठन बनाने का काम नहीं किया, वे ही ज्यादा से ज्यादा बेमतलब हवाई बातें करते हैं और कुछ मुट्ठी भर लोगों को लेकर दिवास्वप्न देखा करते हैं। लेकिन जिन लोगों ने खुद अपने हाथ से संगठन का निर्माण किया है वे जानते हैं कि वास्तव में नेक और ईमानदार आदमियों के जीवन में भी ऐसी कितनी ही विचित्र बाते घट जाती हैं। जो कार्यकारी जिम्मेदारी पर है उस नेता के मामले में भी, ईमानदार होने के बावजूद ऐसी बातें घट सकती हैं। ये सब जटिल तरह की कुछ समस्याएं हैं। उदाहरणार्थ किस तरह कॉमरेडों के बहुमुखी विकास को रोका जाता है, किस तरह कभी-कभी उन पर निर्दोष होते हुए भी अनावश्यक रूप से पाबन्दियाँ लगती हैं और किस प्रकार अनुशासन के नाम पर कॉमरेड के मान्य लोकतांत्रिक अधिकारों और स्वतन्त्रता को भी दबा दिया जाता है–यह सब हमें पता है। इस तरह की घटनाएं मजदूर वर्ग की एक मॉडल पार्टी में भी हुई हैं और हो सकती हैं। इसलिए ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है कि हमारी पार्टी में ऐसा नहीं हो सकेगा।

ऐसी बातें यदि किसी नेता की ओर से भी हों तो निश्चय ही उसका विरोध करना जरूरी है, नहीं तो इससे नेता में भी गिरावट आएगी और कार्यकर्ता में भी। लेकिन संघर्ष करने का सही तरीका क्या होगा? साधारण कॉमरेडों के अधिकारों की रक्षा के संघर्ष का सही तरीका क्या है? पार्टी की सेहत और कॉमरेडों के अधिकारों को बचाने के नाम से चलाया जा रहा संघर्ष ऐसा नहीं हो सकता जो उस उद्देश्य को ही यानी पार्टी की सेहत को ही चौपट करने वाला हो। अगर अधिकारों के लिए संघर्ष ऐसा रूप ले ले कि पार्टी की बची-खुची सेहत भी बरबाद हो जाए; कॉमरेडों में आपस में झगड़े, द्वेष और परस्पर संदेह बढ़ जाए, सबके मुँह लटक जाएं, कोई उन्मुक्त हँसी हंसे नहीं, खुल कर बात नहीं करें और एक-दूसरे की पीठ पीछे आलोचना करें तो क्या ये स्वस्थ लक्षण हैं? याद रखें कि आलोचना करना और झगड़ा करना एक ही बात नहीं है। यदि आलोचना पार्टी-हित में और पार्टी की एकता को और अधिक मजबूत करने के लिए है तो पीठ पीछे आलोचना करने की क्या जरूरत है? जो आलोचना किसी की पीठ पीछे की जा रही है वह उस कॉमरेड के सामने क्यों नहीं की जाती? इसे छुपाने की क्या जरूरत है? यह खुसर-फुसर क्यों? इसके अलावा कई बार कुछ नेता और कॉमरेड ऐसे ढंग से घटनाओं का जिक्र करते हैं या हवाला देते हैं या किसी कॉमरेड के बारे में चर्चा करते हैं जो ठीक व शालीन नहीं हैं। लेकिन नेतृत्व की मौजूदगी में या आम पार्टी सदस्यों के सामने वे खुले आम उसे ठीक उसी लहजे में व्यक्त नहीं कर पाते हैं या करते नहीं हैं जैसे कि वे कहीं और करते हैं।

कॉमरेड्स! इनमें भी दो किस्म के लोग हैं। एक तरह के वे लोग हैं जिनमें जानबूझ कर ऐसा करने की आदत है। हालांकि ऐसे लोगों की संख्या अब बहुत कम है। ये लोग नैतिक-संकोचहीन (अनस्क्रुपलस) हैं। ऐसा आचरण करने वालों के बारे में पार्टी नेतृत्व को जानकारी हैं। परन्तु एक तरफ तो पार्टी उन्हें ऐसे दोष से अपने आपको मुक्त करने का समय दे रही है और दूसरी तरफ समग्र पार्टी-हित में उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही करने की बात अभी सोच नहीं रही है। लेकिन मैंने जो अभी बात कही इस से आप समझ सकते हैं कि पार्टी नेतृत्व को इस बारे में पूरा पता है। दूसरी तरह के वे लोग हैं जो निष्कपट होते हुए भी ऐसे आचरण के शिकार हैं। इस बात के बारे में वे बिल्कुल जागरूक नहीं हैं कि उनके द्वारा ऐसी बात भी होती है। वे जब पार्टी के सामने अपनी बात रखते हैं तो पार्टी नेतृत्व की मौजूदगी और पार्टी माहौल का उन पर काबू यानी संयम रखने वाला (रेस्ट्रेनिंग) असर होने से उनका वक्तव्य व लहजा दूसरी तरह का हो जाता है।

परन्तु हम जानते हैं कि ये लोग बाहर जो कुछ बोलते है उसे पार्टी के खुले मंच पर नेतृत्व के सामने नहीं बोलते हैं। जब कोई नेता या कॉमरेड इस तरह से 'रिपोर्ट' पेश करता है या चर्चा या आलोचना करता है तो वह यह समझने में पूर्णत: असमर्थ रहता है कि यह सब कम्युनिस्ट आचरण-विधि के अनुरूप नहीं है। उसके बिल्कुल अनजाने में ही ऐसा होता है भले ही अपने आचरण को सही ठहराने के लिए वह युक्ति का जामा पहनाने तक का सहारा लेता है। उन्हें इस बारे में सतर्क रहना चाहिए। लेकिन जो कॉमरेड जानबूझकर ऐसा करते हैं उन्हें भी सोचना होगा कि इससे उनको क्या मिलेगा? जिस क्रान्ति के लिए वे अपनी जान-न्योछावर करने की सोचते हैं उसमें इससे कितनी मदद मिलेगी? जो इस तरह आचरण करत हैं वे अपने से यह सीधा सवाल नहीं करते। यदि यह सवाल उन्होंने किया होता तो वे अपने आप आसानी से देख पाते कि उनका आचरण कितना असामान्य व अनुचित है? वे देख पाते कि उनकी चर्चाएं कम्युनिस्ट आचरण विधि के अनुरूप नहीं है बल्कि कोरी आत्म-संतुष्टि के लिए है। इनमें ऐसी चीज की बू आती है जो निर्वैव्यक्तिक (इम्पर्सनल) नहीं हैं, पार्टी हित में भी नहीं है। इसलिए किसी नेता या कॉमरेड के बारे में आलोचना या चर्चा करने को यदि कुछ है तो जो बात उनकी गैर-मौजूदगी में कही जा सकती है वह उनके सामने भी आसानी से कही जा सकती है और खुले दिल से और बिना लागलपेट के यदि वह बात कही जाए तो उससे उनका आपसी सम्बन्ध और भी अच्छा हो जाता है; एकता और भी मजबूत होती है और समझदारी भी और बेहतर बनती है।

मैं यहाँ एक और बात कहना चाहता हूँ। एक-दूसरे से किसी मुद्दे पर मतभेद को लेकर तर्क-वितर्क करते समय कॉमरेड लोग आपस में कभी उत्तेजित भी हो सकते हैं। अपने गुस्से के कारण संयम खोकर कोई कॉमरेड दूसरे साथी को थप्पड़ भी मार दे सकता है। यह असम्भव नहीं है और यह अस्वाभाविक भी नहीं हैं। फिर भी याद रखें कि सामान्यत: ऐसा होना नहीं चाहिए। लेकिन अगर कभी ऐसा हो भी जाए कि क्षणिक गुस्से में कोई अपने पर संयम नहीं रख पाया और वह दूसरे साथी को थप्पड़ दे मारे तो इसके लिए उसे शर्म आनी चाहिए और भविष्य में अपने पर काबू रखने की कोशिश करनी चाहिए। कॉमरेड अपने-आप से पूछें कि हमारे उस तर्क-वितर्क का उद्देश्य क्या है? हमारी चर्चा या तर्क-वितर्क का उद्देश्य है क्रान्ति और पार्टी के हित में अपने मतभेदों को पाटना तथा अपनी एकता को और अधिक मजबूत करना। लेकिन अगर आचरण ऐसा हो जाए कि यह एकता मजबूत करने में मदद करने की बजाए उसमें बाधा डाले, गलतफहमी पैदा करे तथा तर्क-वितर्क के मूल उद्देश्य को ही चौपट कर दे तो उसे कॉमरेडों को नहीं करना चाहिए। लेकिन फिर भी अगर कभी इस तरह की घटना हो जाए तो जिन पर मार पड़ी उसे भी सोचना चाहिए कि दोनों आखिर आपस में कॉमरेड ही तो हैं तभी तो ऐसा आचरण हुआ। यह भी समझना होगा कि जितना भी गुस्सा या उत्तेजना क्यों न हो आम तौर पर किसी भी अपरिचित व्यक्ति को थप्पड़ मारा या पीटा नहीं जाता है। इसलिए अगर कभी ऐसा हो भी गया तो उसमें मन खराब करने की क्या बात है? बल्कि उल्टे आलोचना या बहस के मूल उद्देश्य को सही-सही समझने के बाद जिस कॉमरेड ने ऐसा आचरण किया उसे भी वह समझाने की कोशिश करेगा। इसलिए इस तरह की घटना अगर घटती है तो उसे किसी दूसरे रूप में लेने का कोई तुक नहीं है। दूसरे रूप में लेने का केवल एक ही अर्थ है कि पार्टी के अन्दर रहते हुए भी वह अपनी एक अलग व्यक्ति-सत्ता, व्यक्तिवादी मनोभावना और अहं-बोध लेकर चल रहा है। वैसे तो वह पार्टी के लिए अपना जीवन कुर्बान कर देने का दावा करता है लेकिन अपने व्यक्तिवाद और झूठे मर्यादाबोध को छोड़ नहीं सकता तो वह भला कैसा क्रान्तिकारी है?

कई कार्यकर्ता जलसे में जोशीले गरमा-गरम भाषण देते हैं, जेल जाते हैं और क्रान्ति के लिए अपना जीवन न्योछावर करने का भी दावा करते हैं लेकिन जो अपने अहं-बोध को छोड़ नहीं सकते हैं वे तो असल में नकली क्रान्तिकारी हैं। एक न एक दिन उनका नकलीपन पकड़ा ही जाएगा। चाहे क्रान्ति की हजार बातें कहें; फांसी के तख्ते पर चढ़ जाने के लिए तैयार होने के हजार दावे करें फिर भी लम्बे अर्से तक उनका यह नकलीपन छुप नहीं सकता, चाहे नकलीपन नग्न और घिनौने ढंग से हो या बुद्धिमत्ता के लबादे में लिपटा हो–इसका पर्दाफाश होना लाजमी है। कॉमरेडों को यह बात विशेष तौर पर याद रखनी चाहिए कि व्यक्तिवाद एवं अहं-बोध चाहे जितने भी छोटे आकार में क्यों न हो इस तरह से रह जाने से एक दिन इसी से राजनीतिक मौकापरस्ती, हठवादिता और संशोधनवाद का जन्म होता है। वरना इस बात की किसी और ढंग से व्याख्या नहीं की जा सकती कि एक दिन जबरदस्त कुर्बानी देने वाला कोई समर्पित क्रान्तिकारी कार्यकर्ता क्यों बाद के जीवन में सभी क्रान्तिकारी संघर्षों के दायरे से धीरे-धीरे बाहर हो जाता है, पूरी तरह अलग हो जाता है और संशोधनवादी बन कर रह जाता है। **(अगले अंक में जारी.....)**

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly Date of Publishing: 19 July, 2012

सर्वहारा दृष्टिकोण

22 जुलाई से 5 अगस्त, 2012

अधिग्रहित भूमि को पुनः हासिल करने के लिए किसान कटिबद्ध

राँची: गत् 4 जुलाई को जिला के काँके कस्बे में भूमि अधिग्रहण के खिलाफ हुए आदिवासी किसान आन्दोलन पर पुलिस ने अंधाधुंध लाठीचार्ज कर 4 किसानों को गंभीर रूप से घायल और 20 किसानों को चोटिल कर डाला। इनमें महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग भी हैं। इस घटना के प्रतिवाद में एसयूसीआई(सी) समेत विभिन्न संगठनों द्वारा जलसे-जुलूस किए जा रहे हैं। 4 घायल आन्दोलनकारी राँची के आरआईएमएस हस्पताल में भर्ती हैं। आन्दोलनकारियों ने अपनी माँगों के समर्थन में काँके-पत्रातु रोड जाम सहित कई तरह से आन्दोलन छेड़ा हुआ है।

बीजेपी-नीत राज्य सरकार काँके कस्बे में आदिवासी किसानों की 227 एकड़ जमीन अधिग्रहण कर लॉ-यूनिवर्सिटी और आईआईएम खोलना चाहती है। दूसरी तरफ किसानों का कहना है कि ये अगर खोलने हैं तो उसके लिए पास ही अनुपजाऊ जमीन पड़ी है, वहाँ खोले जाएं। उपजाऊ और बहु फसली जमीन लेने की क्या जरूरत है? लेकिन सरकार किसानों की एक नहीं सुन रही है। नतीजतन 10 गाँवों के किसान एकजुट होकर आन्दोलन की राह पर हैं। उन्होंने पहले कानूनी रास्ते से ही समस्या को सुलझाना चाहा था। सोचा था कि कोर्ट उनकी फरियाद जरूर सुनेगी और उनके वक्तव्य से सहमत होगी। लेकिन उनका यह भ्रम जल्द ही टूट गया। पहले झारखण्ड हाई कोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट ने भी उनकी अपील खारिज कर दी। इसी बीच सरकार ने जबरन जमीन दखल करके चारों तरफ बाड़बन्धी का काम शुरू कर दिया। ऐसे में लाचार होकर आन्दोलनकारियों ने 4 जुलाई को बाड़ तोड़ दी तो पुलिस ने उन पर बेरहमी से लाठीचार्ज किया।

अगले दिन 5 जुलाई को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के जिला सचिव कॉमरेड सिद्धेश्वर सिंह और जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड केया डे सहित 4 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल घटना स्थल पर जाकर आन्दोलनकारियों से मिला। आन्दोलन के प्रति पार्टी ने समर्थन जताया। इसी दिन राँची सैनिक मार्केट से बुद्धिजीवियों और नागरिकों का प्रतिवाद जुलूस भी निकला। इस दिन राँची में एसयूसीआई(सी) के नेता-कार्यकर्ताओं समेत काफी तादाद में लोग मौजूद थे। जुलूस एल्बर्ट एक्का चौक पहुँचकर सभा में तब्दील हो गया। वहाँ कॉमरेड केया डे ने आन्दोलनकारियों को संग्रामी अभिनन्दन देते हुए कहा कि किसी एमएलए, एमपी या बड़े नेता पर भरोसा न रखकर जनकमेटी गठित कर खुद ही आन्दोलन चलाना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि यह आन्दोलन हम सब को प्रेरणा देगा। राँची के एक और कोने में हमने एचईसी में बस्ती बचाओ आन्दोलन गठित किया हुआ है, वहाँ भी यह आन्दोलन प्रेरणा देने का काम करेगा।

प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि सीपीआई, सीपीआई(एम) ने रस्म अदाएगी के तौर पर कुछ बयानबाजी और भाषणबाजी करके इतिश्री कर ली है। यहाँ तक कि कोई-कोई तो इसे महज 'आदिवासियों की ही समस्या' कह कर संकीर्ण दायरे में घेरकर रखना चाहता है। किसानों की माँगों के समर्थन में भाषा-धर्म-वर्ण-सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर सभी लोगों को लामबन्द करके आन्दोलन को तेज करने का एसयूसीआई(सी) ने आह्वान किया है।

पाकिस्तान के मौजूदा हालात के बारे में पाकिस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी का विश्लेषण

पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक हालिया फैसले में प्रधानमंत्री को बर्खास्त कर दिया है। इस बारे में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ पाकिस्तान के केन्द्रीय सचिव मण्डल ने 20 जून को निम्नलिखित बयान जारी किया है:-

पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट की अति सक्रियता काफी दिनों से देखी जा रही है। इस घटना के द्वारा आम आदमी के मन को सुकून पहुँचाने वाला असर डाले जाने पर भी हकीकत में यह घटना पाकिस्तान की राजसत्ता के विभिन्न प्रतिष्ठानों के आपसी टकराव को ही खुलेआम उजागर करने के सिवाय और कुछ नहीं है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा पाकिस्तान के निर्वाचित प्रधानमंत्री को बर्खास्त करने का फैसला इसी हकीकत का जोरदार सबूत है।

पाक गुप्तचर संस्था 'आईएसआई' के बारे में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की हालिया कटु टिप्पणी, ब्रिगेडियर अलि के कोर्ट मार्शल का मामला और सबसे अन्त में प्रतिरक्षा मामलों की संसदीय कमेटी में सीनेट के मुशाहिदों की गवाही, जिसमें उन्होंने जोर देकर कहा है कि पाक सामरिक प्रतिष्ठान आज बंटा हुआ है-आदि निस्संदेह साबित करते हैं कि हालात सचमुच कितने खराब हैं। आगामी दिनों में प्रधानमंत्री जब नहीं रहेंगे और राष्ट्रपति के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले खोलने के लिए नए प्रधानमंत्री स्विस बैंक को चिट्ठी लिखेंगे, जिसके बाद विरोधी दल एक काम चलाऊ सरकार और मुख्य चुनाव आयोग की नियुक्ति को लेकर किसी तरह सर्वसम्मति नहीं बना पाएंगे, तो आखिरकार सारी की सारी सत्ता अवश्यम्भावी तौर पर मुख्य न्यायाधीश के हाथों में केन्द्रित हो जाएगी। मुख्य न्यायाधीश किस के पक्षधर होकर काम कर रहे हैं इस बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं। जिसे बेबुनियाद नहीं ठहराया जा सकता वह यह है कि जिया ऊल हक की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले आईएसआई के कुछ कर्ताधर्ता और गैर कानूनी घोषित किए गए संगठन हिजब-उ-तहरीर, जिसके साथ आईएसआई का घनिष्ट सम्बंध और साँठ गाँठ भी है, इनकी मिली-जुली जुण्डली ही मुख्य न्यायाधीश के पीछे है।

पाकिस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो ने हाल ही में एक प्रैस बयान में कहा है कि मुख्य न्यायाधीश के बेटे और संवाददाताओं के व्यापक भ्रष्टाचार की गुप्त खबर लीक होने के पीछे भी राजसत्ता के प्रतिष्ठानों के बीच चल रहा तीव्र द्वन्द्व ही कारण है।

पश्चिम बंगाल में आशा कर्मियों का विधान सभा अभियान

कोलकाता: 22 जून को विभिन्न जिलों से आई 'आशा' स्कीम के तहत कार्यरत लगभग 5 हजार से भी ज्यादा महिला स्वास्थ्य कर्मियों ने हावड़ा और सियालदाह स्टेशन पर एकत्रित होकर विधान सभा अभियान किया। रानी रासमणि एवेन्यू में हुई सभा से आशा कर्मियों ने अपनी माँगों सम्बन्धी ज्ञापन मुख्यमंत्री को सौंपा।

ज्ञापन में आशा कर्मियों के बीच भेदभाव पैदा करने वाले काम के आधार पर 'इनसेन्टिव' अर्थात प्रोत्साहन राशि के प्रावधान का कड़ा विरोध करते हुए मासिक बंधा वेतन 6600 रुपये देने की मांग की गई और इसके लिए सिक्किम सरकार की तरह इस राज्य की सरकार की ओर से भी मासिक 3000 रुपये दिए जाने, 6-7 महीने के बकाया वेतन का भुगतान तुरन्त करने, आशा स्कीम की सभी कर्मियों को स्वास्थ्य कर्मचारी का दर्जा देने की भी माँग की गई। ज्ञापन देने गए प्रतिनिधि मण्डल में नारायण अधिकारी के नेतृत्व में कृष्णा प्रधान, शीला चक्रवर्ती, मिनति मण्डल शामिल थी। सभा की अध्यक्षता यूनियन की राज्य अध्यक्ष विमल जाना ने की। आमन्त्रित अतिथि के तौर पर एसयूसीआई (सी) विधायक कॉ. तरुण नश्कर ने वक्तव्य रखा। एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव कॉमरेड दिलीप भट्टाचार्य सभा के मुख्य वक्ता थे।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com